Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

नागार्जुन की अर्थवैज्ञानिक रचनाओं का अध्ययन

Dr. Rashmi Rekha*

Assistant Teacher Department of History, (BRA Bihar University, Muzaffarpur) Kamla Girls High School, Dumra, Sitamarhi, Bihar

सारांश – ***संरचना के स्तर पर भाषा यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की सुनिश्चित व्यवस्था होती हैं। इसका प्रयोजन होता है-सम्प्रेषण, जिसे अर्थ कहते हैं। अंग्रेजी में ध्वनि के लिए साउण्ड और फोनिम दो शब्द हैं। साउण्ड सामान्य ध्वनि के अर्थ में प्रयुक्त होता है जबकि भाषा में आनेवाली ध्वनियों को भाषाविज्ञान में फोनिम कहा जाता है।***

नागार्जुन ऐसे लेखक हैं जिन्होंने नामों को ग्रहण करने में किसी निश्चित दृष्टिकोण या विचार को नहीं अपनाया है। आवश्यकतानुसार सभी स्रोत वाले नाम आ गये हैं, स्त्री पुरूषों के नामों और स्थानों के नामों में भी।

संज्ञा और उसके विकारों लिंग, वचन आदि की दृष्टि से विचार करने पर हमें पुलिंग शब्दों से बने स्त्री नाम मिलते है। ऐसे नाम तत्सम रूप भी हैं और तद्भव रूप भी। जैसे, गुह्येश्वर, धनेश्वर, गुंजेश्वर, भुवनेश्वर, महेश्वर आदि शब्दों की सत्ता तत्सम रूप में ही प्रतिष्ठित है।

----------X----------

प्रस्तावना:

संरचना के स्तर पर भाषा यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की सुनिश्चित व्यवस्था होती हैं। इसका प्रयोजन होता है-सम्प्रेषण, जिसे अर्थ कहते हैं। अंग्रेजी में ध्वनि के लिए साउण्ड और फोनिम दो शब्द हैं। साउण्ड सामान्य ध्वनि के अर्थ में प्रयुक्त होता है जबकि भाषा में आनेवाली ध्वनियों को भाषाविज्ञान में फोनिम कहा जाता है। फोनिम के लिए हिन्दी में कई शब्द प्रचलित हैं। जैसे-ध्वनि, भाषाध्वनि, ध्वनिग्राम और स्वनिम। डॉ. जितराम पाठक ने भाषाध्वनि शब्द का प्रयोग किया हैं। लेकिन भोलानाथ तिवारी इसे ध्वनिग्राम कहते हैं। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा इसके लिए स्वनिम शब्द का प्रयोग करते हैं। मेरी दृष्टि में फोनिम के लिए हिन्दी में अब पारिभाषिक रूप में स्वनिम तथा एलोफोन के लिए उपस्वन शब्द का प्रयोग स्थिर हो गया है। कुछ कारणों से इस शोध प्रबन्ध में फोनिम के अर्थ में ध्वनिशब्द का प्रयोग किया गया है। कारण, स्वनिम नया शब्द है और फोनेटिक्स के अर्थ में ध्वनि विज्ञान शब्द का जाने-अनजाने प्रयोग अब भी किया जा रहा है। ध्वनि की दृष्टि से नामों के अध्ययन से मेरा तात्पर्य फोलेटिक्स या स्वनिम विज्ञान की दृष्टि से ध्वनियों का अध्ययन करना है।

भाषाविज्ञान में ध्वनि या स्वनिम भाषा की लघुतम इकाई है। स्वनिम की तीन विशेषताएँ होती हैं- प्रथम, प्रत्येक स्वनिम का उच्चारण दूसरे स्वनिम से भिन्न या व्यतिरेकी होती है। द्वितीय, स्वनिम में अर्थ-भेदकता की क्षमता होती है, तृतीय, अकेले प्रत्येक स्वनिम अर्थहीन होता है। यदि हम क, च, ट, त, प् आदि बोलते हैं इनका अलग-अलग अर्थ नहीं होता है। मगर जब एक से अधिक स्वनिम निश्चित क्रम से मिलकर स्थिर रूप् ग्रहण कर किसी वस्तु का संकेत ग्रहण कराते हैं तब वे अर्थवान होते हैं।

फोनेटिक्स या ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत किसी भाषा की ध्वनियों (स्वनिमों) का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। प्रत्येक भाषा में निश्चित ध्वनियाँ होती हैं। अध्ययन क्रम में ध्वनियों के स्वरूप, उच्चारण, स्थान, प्रयत्न, परिवर्तन तथा परिवर्तन के कारण आदि का अध्ययन होता है।

भाषा विज्ञान में ध्वनि परिवर्तन के निम्न रूप स्वीकार किये गये हैं-(1) आगम (2)लोप (3) विपर्यय (4) समीकरण (5) विषमीकरण (6) स्वर भक्ति।

(1) आगम-किसी शब्द के उच्चारण में सुविधा के लिए जब बाहर से कोई ध्वनि जोड़ ली जाती है तो इसे आगम कहते हैं। आगम का अर्थ है आगमन या आना। आंचलिकता की प्रवृत्ति के कारण नागार्जुन जी ने व्यक्तिवाची नामों के लेखन में पात्रों की उच्चारणगत सुविधा और ज्ञान स्तर का

www.ignited.in

ध्यान रखा है। इस कारण यत्र तत्र नामों के लेखन क्रम में ध्वनियों का आगमन हुआ है।

नागार्जुन जी ने औ स्वर वाले नामों को दो तरह से लिखा है। जैसे अपने ग्राम का नाम वे कहीं तरौनी लिखते हैं और कहीं तरउनी।

उनकी निम्न कविता पंक्तियों में स्पष्टतः औ के स्थान पर अउ का प्रयोग किया गया है।

याद आता वह मुझे अपना तरउनी ग्राम

याद आती लीचियाँ, वे आम

याद आते मुझे मिथिला के रुचिर भू भाग

याद आते धान

याद आते कमल कुमुदिनी और ताल मखान

याद आते शस्य श्यामल जनपदों के नाम

रूप -गुण-अनुसार ही रक्खे गये वे नाम

याद आते वेणुवन वे नीलिमा के निलय अति अभिराम।

लेकिन य को ज लिखने में कहीं शिथिलता नहीं मिलती। जैसे- योगी-जोगी-योगादास-जोगादास। यशोधर-जसोधर, युगल-जुगल इत्यादि।

नागार्जुन ने य ध्वनि को ऐ तथा ज दोनों रूपों में लिखा है। निम्नलिखित तत्सम नामों में आये य को उन्होंने अपनी रचनाओं में ऐ लिखा है।

जयकृष्ण-जैकिसुन

जयनन्दन-जैनन्दन

जयनारायण-जैनरायन

जय वल्लभ मलिम -जै वल्लभ मलिक

यदि हम अपने देश के सन्दर्भ में नामों पर विचार करें तो दो बातें हमारे सामने आती हैं। प्रथम यह कि सभी भारतीयों के नाम एक ढंग के नहीं हैं। आदिवासी जनों के नाम तथा दक्षिण भारतीयोकं के नाम उत्तर भारतीय नामों के ढंग से भिन्न हैं। स्थान नामों में तो और भी विचित्रता है। दार्जीलिंग कलिम्पोग जैसे नाम या कोयम्बटूर, कोच्चि, जैसे नामों की कोई समझदारी उत्तर भारत के लोगों में नहीं होती, जबकि ये सभी भारतीय स्थान हैं।

नागार्जुन ऐसे लेखक हैं जिन्होंने नामों को ग्रहण करने में किसी निश्चित दृष्टिकोण या विचार को नहीं अपनाया है। आवश्यकतानुसार सभी स्रोत वाले नाम आ गये हैं, स्त्री पुरूषों के नामों और स्थानों के नामों में भी। यहाँ उनके द्वारा प्रयुक्त नामों की सूची सा्रेत की दृष्टि से प्रस्तुत की जाती है।

हिन्दी में प्राप्त होने वाले कुछ शब्दों की बनावट पर ध्यान दें तो पायेंगे कि उनकी रचना में सार्थक एवं निरर्थक शब्द-खंडों का योग मिलता है। जेसे-प्र+हार, सुन्दर+ता-सुन्दरता आदि। इनमें निरर्थक खंड या तो शब्द के आरंभ में जुडे होते हैं या अन्त में। इन खंडों का शब्द के रूप् में स्वतंत्र प्रयोग नहीं मिलता हैं ये परजीवी शब्दांश हैं जो किसी सार्थक शब्द में जुड़कर नया शब्द बनाने में समर्थ हैं, लेकिन स्वतंत्र रूप में अर्थहीन और पंगु हैं। इन शब्दांशों को संस्कृत व्याकरण में प्रत्यय कहा गया है।

संज्ञा और उसके विकारों लिंग, वचन आदि की दृष्टि से विचार करने पर हमें पुलिंग शब्दों से बने स्त्री नाम मिलते है। ऐसे नाम तत्सम रूप भी हैं और तद्भव रूप भी। जैसे, गुहयेश्वर, धनेश्वर, गुंजेश्वर, भुवनेश्वर, महेश्वर आदि शब्दों की सत्ता तत्सम रूप में ही प्रतिष्ठित है। ये ही मूल हैं और ये पुल्लिंग हैं। इन शब्दों में ईकार लगाकर स्त्री पात्रों के नाम बनाये गये हैं। ये स्त्री नाम तत्सम और तद्भव दोनों रूपों में आये हैं। जैसे- गुहयेश्वरी, गुंजेश्वरी, विश्वेश्वरी, तत्सम रूप में आये है। केवल विश्वेश्वरी तत्सम तथा तद्भव बिसेसरी दोनों रूपों में प्राप्त है। शेष महेश्वरी, धनेश्वरी आदि तद्भव रूप् में ही प्राप्त है।

कुछ तत्सम नाम पुंलिग शब्दों के अन्त में आ प्रत्यय के योग से निर्मित हुए हैं।

जैसे-पदमा-पद्म+आ, रंजना-रंजन+आ, जयमंगला-जयमंगल+आ, सुशीला-सुशील+आ इत्यादि।

(1) तत्पुरुष: जिस समस्त पद का उत्तर पद प्रधान होता है वह तत्पुरुष समास कहलाता है। इस समास में पूर्व पद मुख्यतः कारक विभक्ति से जुड़ा होता है। तदनुसार इसके कर्म (द्वितीया) करण (तृतीया), सम्प्रदान (चतुर्थी) अपादान (पंचमी) सम्बन्ध (षष्ठी), अधिकरण (सप्तमी) नामक उपभेद होते हैं यहाँ नागार्जुन के पात्र नामों से कुछ

उदाहरण प्रस्तुत हैं। पुरुष नामों में निम्नलिखित नाम तत्पुरुष के उदाहरण हैं।

उमानाथ-उमा के नाथ

जटाधर-जटा को धारण करनेवाला

वैद्यनाथ -वैद्यों के नाथ

कमलाकान्त -कमला के कान्त

लक्ष्मीनाथ -लक्ष्मी के नाथ

(2) कर्मधारय-जिन समस्त शब्दों में विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध या उपमेय-उपमान भाव होता है उनमें कर्मधारय समसा होता है। नागार्जुन के निम्न नामों में कर्मधारय समास है।

नीलिमणि -नील हे जो मणि

ललित किशोर -ललित है जो किशोर

श्यामसुन्दर -श्याम जो सुन्दर है

नवल किशोर -किशोर जो नवल है

(3) द्वन्द्व -जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं वे द्वन्द्व समास कहलाते हैं। नागार्जुन में निम्न नामों में द्वन्द्व समास हैं।

हरिहर- हरि और हर

श्रीनारायण- श्री और नारायण

शिवराम - शिव और राम

रामशंकर - राम और शंकर

रामलखन- राम और लखन

(4) बहुव्रीही- इस समास में समस्त पद अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करता है। वह अर्थ किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु के लिए रूढ़ होता है। नागार्जुन के व्यक्तिवाची नामों में से निम्न नामों में बहुव्रीही समास है।

रेवतीरंजन -रेवती का रंजन करनेवाले अर्थात् बलराम

चक्रपाणि- चक्र है जिसके पाणि में वह अर्थात् विष्णु

शशिनाथ- शशि के नाथ अर्थात् शिव

पद्मनाथ -पद्म निकता है जिसकी नाभि से वह अर्थात् विष्णु

अत्युतानंद - जो अच्युत और आनन्द रूप है वह अर्थात् विष्णु

(5) मध्यपदलोपी: जिस समस्त पद में दो पदों के मध्य आनेवाले पदों का लोप होता है उसे मध्य पद लोपी समास कहते हैं। जैसे-

हरिदेव-हरि जो है देव

सुधाकर -सुधा है जिसके कर (किरणों) में

रामनारायण-राम जो नारायण रूप् है

कृष्ण वल्लभ-कृष्ण जो वल्लभ है

रामदहिन-राम जो है दाहिने

(6) द्विगु- जिस समस्त पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता हे वह द्विगु कहलाता है। नागार्जुन के निम्न पात्रों के नाम द्विगु के उदाहरण हैं।

त्रियुगी-तीन युग से युक्त

पचकौड़ी -पाँच कौड़ी का समूह

तिनकौड़ी -तीन कौड़ी का समूह

छकौड़ी -छह कौड़ी का समूह

(7) नन समास- जिन समस्त पद से नकार सूचक अर्थ प्राप्त होता है उसे न´ समास कहते हैं। इस समास के दो तीन उदाहरण नागार्जुन में प्राप्त हैं। जैसे-

अनन्त-नहीं है अन्त जिसका

अशंक -नहीं है शंकाग्रस्त जो

नागार्जुन की रचनाओं में कोई व्यक्तिवाची नाम अव्ययीभाव का उदाहरण नही हैं। ऊपर की सूची से यह भी स्पष्ट है कि नागार्जुन की रचनाओं में सर्वाधिक नाम तत्पुरुष समास वाले हैं।

यस्मिंस्तूच्चरिते शब्द यदा योरर्थ प्रतीयते।

तमाहुरर्थ तस्मैव नान्यदर्थस्य लक्षणम।

www.ignited.in

व्यक्तिवाची नाम रूप की दृष्टि से या तो शब्द होते हैं या समस्त पद। इनका अर्थ होता है या नहीं, इस सम्बन्ध में दो तरह की बातें मिलती हैं। प्रथम यह कि नाम शब्दिक रूप से अर्थवान होते हैं। द्वितीय नाम से अर्थ का महत्व नहीं होता है या नाम का अर्थवान होना अनिवार्य नहीं है। हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं नाम में क्या रखा है? कुछ भी समझ लीजिए। आप ही बताइए, आपका क्या नाम है? जिस नाम से सारी दुनिया आपको जानती है वह नाम क्या आपके गुरूजनों के मन में कहीं भी था जब आप इस संसार में आये थे? और अब आप जिस नाम से जाने जाते हैं उसी का वास्तविकता से तालमेल है? असल में नाम में धोखा है।..... एक अहिन्दी भाषी नेता ने जब मुझसे इसका (अर्थात् हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाम का) अर्थ पूछा तो मैं केवल यही उत्तर दे सका कि यह नाम शब्द के रूप में बिल्कुल अर्थहीन है।

भाषा विज्ञान में अर्थ के प्रसंग में मुख्य रूप से तीन तत्वों पर विचार किया जाता है।

(1) अर्थबोध के साधन

(2) अर्थ-परिवर्तन की दिशाएँ।

(3) अर्थ-परिवर्तन के कारण।

इन तीनों के अन्तर्गत जिन तत्वों की चर्चा होती है उनसे जुड़े हुए कुछ बिन्दु व्यक्तिवाची नामों के अर्थ विश्लेषण के प्रसंग में उपयुक्त हैं। उन्हीं के आलोक में नागार्जुन द्वारा प्रयुक्त व्यक्तिवाची नामों का अर्थ का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

निष्कर्ष:

जिस वस्तु या व्यक्ति को नाम दिया जाता है उस वस्तु या व्यक्ति को नामी कहते हैं। नामी अर्थात् नामवाला। नामी यदि वस्तु या व्यक्ति रूप में है तो वह इन्द्रियगम्य होता है। यदि भाव है तो उसका प्रत्यय या बोध मानस में होता है। नाम शब्द होता है, अतः ध्वनि रूप में होता है।

उनका क्षेत्र उनकी राजनीतिक विचारधारा से भी निर्देशित हुआ है। माक्र्सवादी होने के कारण भारत से लेकर रूस तक के स्थानों, लेखकों, राजनेताओं आदि के नाम उनकी रचनाओं में प्राप्त हैं। दूसरी राजनीतिक पार्टियों से विरोध अथवा उनके प्रति निन्दा भाव रखने के कारण उनके साहित्य में समसामयिक राजनीतिक पार्टियों के अनेक नेताओं के नाम आये हैं। नागार्जुन केवल लेखक ही नहीं थे, वामपंथी जुझारू कार्यकर्ता भी थे।

नागार्जुन जी विचार की दृष्टि से वामपंथी हैं मगर संस्कार, शिक्षा तथा परिवेश की दृष्टि से मैथिल ब्राह्मण के संस्कार से मुक्त नहीं है। उनके अध्ययन-मनन का एक क्षेत्र पंडित परम्परा पोषित भारतीय ज्ञान क्षेत्र है। इसमें संस्कृत साहित्य, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, वेद पुराण आदि से सम्बन्धित ग्रंथ आते हैं।

नागार्जुन की रचनाओं में उनके द्वारा दिये गए पात्र नामों में से यदि स्त्री पुरूषों के नामों के अलग प्रतिशत निकालें तो परिणाम निम्न प्रकार होगा -

स्त्री - तत्सम 62% - तद्भव – 18% देशज- 17% विदेशी – 3%

पुरूष- तत्सम 55% - तद्भव – 26% देशज- 14% विदेशी – 5%

अर्थ निरूपण की दृष्टि से नागार्जुण के नामों का विवेचन करने पर हमें बहुत स्पष्ट ढंग से सार्थक नाम नहीं मिलते हैं। साहित्यकार सामान्य जनों की तुलना में अधिक प्रबुद्ध व्यक्ति होता है। वह साहित्य लेखन के क्रम में सावधानी से तथ्यों का संयोजन करता है ताकि देश, काल, परिस्थिति, अन्विति आदि हर दृष्टि से रचना त्रुटिरहित हो। इसका प्रभाव पात्रों, स्थानों तथा वस्तुओं के नामों पर भी पड़ता है।

सन्दर्भ:

हिन्दी शब्दसागर खंड-4, पृ.- 1800

संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, आप्टे, कोष, पृ.- 615

पुरूष नामों का भाषापरक अध्ययन, पृ.- 19

हिन्दी व्याकरण, पृ.- 58

पुरूष नामों का भाषापरक अध्ययन, पृ.- 7

नागार्जुन रचनावली भाग-4, पृ.- 306

नागार्जुन रचनावली भाग-4, पृ.- 344

नागार्जुन जीवन और साहित्य, पृ.- 41

नागार्जुन रचनावली, भाग-2, पृ.- 77

पुरूष नामों का भाषा परक अध्ययन, पृ.- 55

भाषा विज्ञान सिद्धांत और स्वरूप, पृ.- 250

बिहारी सतसई दोहा संख्या

Corresponding Author

Dr. Rashmi Rekha*

Assistant Teacher Department of History, (BRA Bihar University, Muzaffarpur) Kamla Girls High School, Dumra, Sitamarhi, Bihar